नई कहानी की प्रमुख विशेषता थी कि उसमें अपने आसपास के जीवन को ही विषय बनाया गया। उसमें न तो आदेश अथवा उपदेश का आग्रह है और न ही कृत्रिम रूप से गढने का वार्तुय। आलोचक प्रवर के शब्दो में "नई कहानी एक कलात्मक निर्माण है, जो जीवन सत्य को एक नई दृष्टि से देखती है। नई कहानी एक व्यक्ति की कहानी न होकर अपने सम्पूर्ण परिवेश को ओढे रहती है। आज का जनमानस उस जलराशि की तरह है, जो ऊपर से शात पर भीतर हलचल से भरा है नई कहानी इसी हलचल को पकडती है। मन्नू भंडारी की कहानियों और उपन्यास का विषय भी उनके आसपास का परिवेश है। उनके कथा साहित्य की मुख्य विशेषता यर्थाथ की पकड है चाहे वह जीवन के किसी क्षेत्र से हो। यथार्थ का यह रूप नितांत आधुनिक है। अब नीति संस्कृति सत्य तथा पुण्य आज केवल शब्द मात्र है, जिनका कोई अर्थ नही है। एक तरफ मूल्यों का ध्वस है, तो दूसरी ओर मूल्यों के निर्माण का संघर्ष भी। मन्नू भंडारी के पात्र अपने इसी संघर्ष के कारण अपनी एक विशिष्ट पहचाने बनाते हैं।

मन्नू भंडारी की एक अन्य विशेषता उनके रचना संसार की व्यापकता में निहित है। उनके अंदर की विद्रोह भावना उन्हें किसी विशेष दायरे बँधने नहीं देती है। वे केवल नारी, स्त्री–पुरूष सम्बन्ध अथवा महानगरीय ऊब के चित्रण तक सीमित नही रहीं वरन् राजनीति, धर्म, नैतिकता, मजदूर समस्या और बुजुर्गों की पीड़ा आदि का भी बहुत सवेदना के साथ बयान करती हैं और इस बयान में नारी सुलभ कोमलता निरंतर उपस्थित रहती है। इसी कारण वे नए कहानीकारों की भीड में अलग दिखती है। उनकी इसी विशेषता को रेखांकित करते हुए आलोचक आर.एस.सिंह लिखते है, "मन्नू भंडारी नारीत्व की अपनी भावनाओं को लेकर सजग है और उसे बडी सरलता के साथ अपने पाठकों तक संप्रषित भी कर देती है। जिस प्रकार डोरोथी रिर्चडसन ने अपनी रचना पिलिग्रिमेज (1938) के द्वारा मर्दाना यथार्थवादी के समानातर नारीवादी संस्करण का विकास किया। उसी प्रकार मन्नू भंडारी ने अपनी आधुनिकता और नारी सुलभ भंगिमा के साथ नए कहानीकारों के बीच अपनी पहचान बनाई।"[6]

---

[6] देवीशकर अवस्थी – नई कहानी सदर्भ और प्रकृति, पृ 115 से उद्धृत

Scanned with CamScanner

बांध रखती है।

4. देशकाल – कहानी देश काल की उपज होती है। इसलिए हर देश की कहानी एक दुसरे से अलग होती है। भारत या किसी भी भू-भाग की लिखी कहानियों का अपना वातावरण होता है जिसकी संस्कृति, सभ्यता, रूढ़ि संस्कार का प्रभाव उसपर स्वभाविक रूप से पड़ता है।

5. उद्देश्य - उद्देश्य कहानी का एक तत्व माना जाता है क्योंकि सच तो यह है कि किसी भी विधा की रचना निरुद्देश्य नहीं होता है। हर कहानी के पीछे कहानीकार का कोई न कोई प्रयोजन जरुर होता है। यह उद्देश्य कहानी के आवरण में छिपा होता है।

6. शैली- शैली कहानी के कलेवर को सुसज्जित करनेवाला कलात्मक आवरण होता है। इसका सम्बंध कहानीकार के आतंरिक और बाहरी पक्षों से रहता है। कहानीकार की शैली ऐसी हो जो पाठकों को अपनी ओर आकर्षित कर सके। यह काम भाषा शक्ति के द्वारा होता है। कहानीकार की भाषा में इतनी शक्ति होनी चाहिए कि वह पाठक को अपनी मोह पाश में बांध दे। अत: हम कह सकते हैं कि कहानी रचना एक कलात्मक विधान है जो अभ्यास और प्रतिभा के द्वारा ही रूप ग्रहण करती है।

कहानी की परिभाषा- युग प्रवर्तक साहित्यकार प्रेमचंद की राय में कहानी गमले का फूल है। 'कहानी वह ध्रुपद की तान है, जिसमें गायक महफिल शुरु होते ही अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा दिखा देता है। एक क्षण में चित्त को इतने माधुर्य से परिपूर्ण कर देता है कि जितना रात भर गाना सुनने से भी नहीं हो सकता है।' डा. श्रीपति शर्मा राय के शब्दों में 'कहानी वह रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य होता है। 'अज्ञेय ने कहानी को एक सूक्ष्म दर्शी यन्त्र कहा है।' डा. गणपति गुप्त ने ठीक ही कहा है कि प्राचीन कहानियाँ स्वर्ग लोक की कल्पना थी, तो आधुनिक कहानी हमें धरती के सुख-दु:ख का सस्मरण कराती है।' वैसे तो कहानी की और भी अनेक परिभाषाएं दी जा सकती है पर किसी भी साहित्यिक विधा को वैज्ञानिक परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता है। साहित्य में विज्ञान की सुनिश्चितता नहीं होती, इसलिए उसकी जो भी परिभाषा दी जाएगी वह अधूरी है।

हिन्दी कहानी का उद्‌भव और विकाश - 19 वी.

Scanned with CamScanner

कहानी के तत्व – साधारणतया कहानी के छ: तत्व माने गए है –

1. कथावस्तु
2. चरित्र- चित्रण
3. संवाद
4. देशकाल या वातावरण
5. उद्देश्य और
6. शैली।

1. कथावस्तु – कथावस्तु कहानी का प्रमुख अंग है। कथावस्तु के बिना कहानी की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कथावस्तु जीवन की अनेक दिशाओं और क्षेत्रों से लिया जाता है जैसे – पुराण, इतिहास, समाज, राजनीतिक आदि। इनमे से किसी भी विषय को चुनकर कथानक अपनी महल खड़ी कर सकता है।

2. चरित्र-चित्रण- चरित्र- चित्रण के अंतर्गत कहानी जिस व्यक्ति की होती है वही उस कहानी का चरित्र कहलाता है। लेकिन कहानियों में चरित्रों की संख्या काम होनी चाहिए। तभी कहानीकार किसी चरित्र को अन्दर और बाहर दोनों पक्षों का अधिक से अधिक विश्लेषण कर सकता है।

3. संवाद – पहले संवाद कहानी का अभिन्न अंग माना जाता था। अब इसकी अनिवार्यता समाप्त हो गई है। आज ऐसी अनेकानेक कहानियाँ लिखीं गई है या लिखी जा रहीं है जिसमे संवाद का एकदम अभाव रहता है। सारी कहानियाँ वर्णात्मक या मनोविश्लेषनात्मक शैली में लिख दी जाती है। इसलिये संवाद की कही भी आवश्यकता नहीं पड़ती है। लेकिन संवाद से कहानी के पात्र सजीव और स्वभाविक बन जाते है और कथा-वस्तु सम्वाद के माध्यम से पाठकों को बांधे रखती है।

4. देशकाल – कहानी देश काल की उपज होती है। इसलिए हर देश की कहानी एक दुसरे से अलग होती है। भारत या किसी भी भू-भाग की लिखी कहानियों का अपना वातावरण होता है जिसकी संस्कृति, सभ्यता, रूढ़ि संस्कार का प्रभाव उसपर स्वभाविक रूप से पड़ता है।

5. उद्देश्य - उद्देश्य कहानी का एक तत्व माना जाता है क्योंकि सच तो यह है कि किसी भी विधा की रचना

Scanned with CamScanner